an>

Title: Need to check increasing pollution in Singrauli district, Madhya Pradesh.

श्रीमती रीती पाठक (सीधी) : हवा और पानी प्राणी मात्र की अनिवार्य आवश्यकताएं हैं जिनके अभाव में जीवन की कल्पना करना भी संभव नहीं है किंतु पर्यावरण के महत्वपूर्ण घटक हवा और पानी ही यदि प्रदूषित हो जाएं तो जीवन जीना कितना कठिन होगा, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है।

पर्यावरण प्रदूषण एक अति गंभीर वैश्विक समस्या है। ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएं इसी पर्यावरण प्रदूषण का परिणाम है जिसकी चिंता राष्ट्रीय व वैश्विक स्तर पर की जा रही है।

मैं जिस सीधी (मध्य प्रदेश) संसदीय क्षेत्र से आती हूँ, उसका एक बड़ा हिस्सा सिंगरौली जिले के रूप में अवस्थित है, जिसे लोग ऊर्जा राजधानी के रूप में जानते हैं और सौभाग्य से सिंगरौली मेरी जन्मस्थली भी है। सिंगरौली में सन् 1840 में पहली बार कोयले की पर्याप्त उपलब्धता का विषय संज्ञान में आया। तब से लेकर आज तक अपने प्राकृतिक स्रोतों के कारण सिंगरौली देश के बड़े भू-भाग को ऊर्जा प्रदान करता है। इन्हीं प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता के कारण कई छोटे और बड़े थर्मल पावर प्रोजेक्ट कोल माइंस प्रोजेक्ट स्थित हैं जिसमें उत्पन्न होने वाले सह-उत्पाद फ्लाई एश इतने बढ़े कि वायु और प्रदूषण का कारण बन गए हैं जिससे सिंगरौली वासियों का श्वास लेना दूभर हो गया है। पर्याप्त जानकारी के अनुसार लगभग 6 मिलियन टन फ्लाई एश प्रतिवर्ष सह-उत्पाद के रूप में निकलती है व शोधों एवं अभिलेखों के आधार पर लगभग 720 किलोग्राम पारा व कई भारी पदार्थ प्रतिवर्ष निकलते हैं जो सामान्य से कई गुना अधिक हैं।संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की रिपोर्ट व औद्योगिक विषय विज्ञान केन्द्र, लखनऊ द्वारा जब सिंगरौली क्षेत्र के 1200 निवासियों का चिकित्सकीय परीक्षण किया गया तो सिंगरौली वासियों के रक्त में पारे का स्तर सामान्य से कई गुना अधिक पाया गया, जिसके कारण बहुत अधिक मात्रा में बच्चों को श्वास-तंत्र की समस्या, डायरिया, निम्न प्रत्युत्पन्न मति, पेट दर्द जैसी गंभीर बीमारियों से जूझ रहा बचपन, साथ ही महिलाओं में सिर दर्द एवं अनियमित मेन्सुरेशन और पुरूषों में स्थायी रूप से तंत्रिका तंत्र, मस्तिष्क और किडनी जैसी गंभीर प्राणघातक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

अतः मेरा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि शीघ्रता के साथ सिंगरौली वासियों के स्वास्थ्य व जीवन रक्षा हेतु सार्थक कदम उठाए जाएं और सभी कारपोरेट को उनकी सामाजिक जिम्मेदारियों का बोध कराकर आवश्यक पहल हेतु निर्देशित किया जाए ताकि सिंगरौली का प्रदूषण हिरोशिमा-नागासाकी व भोपाल गैस त्रासदी जैसे घातक रूप लेने से बच सके।